जनसांख्यिकीय समस्या और मुद्दे : भारत के संदर्भ में

हेमंत कुमार
सहायक आचार्य – भूगोल
राजकीय कन्या महाविद्यालय, निठार, (भुसावर), भरतपुर

सार :–

किसी भी देश का आर्थिक विकास मुख्यतः दो संसाधनों पर निर्भर करता है। प्रथम प्राकृतिक संसाधन तो द्वितीय मानवीय संसाधन। यदि दोनों संसाधनों में संतुलन बना रहता है तब आर्थिक विकास क्रियाशील होता है और जब दोनों संसाधनों में असंतुलन हो मुख्यतः प्राकृतिक संसाधन की अपेक्षा मानवीय संसाधन आधिक्य की स्थिति में हो तब आर्थिक विकास की गति या तो धीमी होगी या पूरी तरह ठप्प। इस संदर्भ में भारत की बात करें तो भारत जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा देश है। यहाँ विश्व के 2.4 प्रतिशत क्षेत्रफल में लगभग 20 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। यदि इसी तरह मानवीय जनसंख्या और प्राकृतिक संसाधनों में असंतुलन बढ़ता रहा तो निःसंदेह भारत के लिए यह स्थिति आज से भी अधिक भयावह होगी।

कुंजी शब्द :– भारत, जनसंख्या, जनाधिक्य।

उद्देश्य :–

1. भारत में बढ़ती जनसंख्या और घटते प्राकृतिक संसाधन की ओर ध्यानाकर्षित करना।
2. जनसंख्या नीतियाँ निर्धारण के पश्चात् भी जनसंख्या वृद्धि के कारण।
3. जनसंख्या वृद्धि अभिशाप या वरदान का मूल्यांकन करना।
4. जनसंख्या वृद्धि की रोकथाम के प्रयास।

भारत में जनसांख्यिकीय समस्या और मुद्दे :–

भारतीय जनसंख्या की स्थिति :–

भारत में जनगणना की शुरुआत 1872 में हुई। 1881 से इसे 10 वर्ष के नियमित अंतराल पर की जाती है। 2011 तक भारत में 15 जनगणना संपन्न हो चुकी है और ''16वीं 2021 में संपन्न होनी थी, किंतु कोविड–19 के चलते इसे 23–24 तक टाल दिया गया है।[1] भारत में प्रथम जनगणना विदेशी सत्ता के समय हुई थी। उस समय

भारत की जनसंख्या लगभग 2 मिलियन थी। 1881 में 25 करोड़ के आस पास थी, जो आजादी के पश्चात् प्रथम जनगणना में 36,10,88090 करोड़ थी और 2011 की 15वीं जनगणना में यह 121 करोड़ हो गई है।''[2] यद्यपि 16वीं जनगणना कोविड–19 के चलते आगे सरका दी गई किंतु ''संयुक्त राष्ट्र विश्व जनसंख्या डेशबोर्ड 2023 के अनुसार भारत की जनसंख्या 142.86 करोड़ हो गई है जो चीन की अनुमानित जनसंख्या 142.57 करोड़ से कुछ अधिक है।''[3] भारत में जनसंख्या विस्फोट लाभ से अधिक हानिकारक है। यह भारतीय समाजों को गरीबी और भुखमरी की ओर धकेलने वाली स्थिति है। ''15 अगस्त 2019 को लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री मोदी ने चिंता प्रकट करते हुए नई पीढ़ी के लिए संकट बताया था।''[4]

जनसंख्या वृद्धि अभिशाप या वरदान :–

किसी भी देश में युवा तथा कार्यशील जनसंख्या की अधिकता तथा उससे होने वाले आर्थिक लाभ को जनसांख्यिकीय लाभांश के रूप में देखा जाता है। किंतु इसके विपरीत यदि युवा और क्रियाशील जनसंख्या हो, किंतु इस जनसंख्या के पास क्रियाशील और आर्थिक विकास को गति देने के लिए समुचित संसाधन की व्यवस्था न हो तब यही जनसंख्या वरदान नहीं अभिशाप के रूप में साबित होती है। भारत में युवा संख्या की अधिकता है। यदि इस युवाशक्ति को आर्थिक विकास की गति देने में लगा दिया जाए तो भारत की आर्थिक रफ्तार बढ़ सकती है किंतु समस्या यह है कि भारत में उचित शिक्षा का अभाव, रोजगार अवसरों की कमी के चलते युवाओं की अधिकांश जनसंख्या अक्रियाशील है। परिणामस्वरूप यह जनसंख्या वरदान नहीं, बल्कि अभिशाप के रूप में उभरी है।

जनसंख्या वृद्धि के कारण :–

भारत की जनसंख्या जिस रफ्तार से बढ़ रही है उस आधार पर तो यह अनुमान लगाया जा रहा है कि भारत शीघ्र ही चीन से आगे निकल जायेगा। कुछ संस्थानों के आँकड़े तो यह बताते हैं कि हम आगे निकल चुके हैं। अतः बढ़ती जनसंख्या की इस गति के कारणों पर चर्चा करना आवश्यक हो जाता है। इसके कारणों को हम निम्नलिखित रूप से स्पष्ट कर सकते हैं।

1. सामाजिक कारण :– रूढ़ियाँ, परंपराऐं और प्रथाऐं, अल्प आयु में विवाह
2. धार्मिक कारण :– पितृ ऋण, पुत्र ऋण, मोक्ष प्राप्ति जैसी हिंदु धारणाऐं।
3. जनजागरूकता का अभाव
4. निरक्षरता और निर्धनता
5. परिवार कल्याण कार्यक्रमों की विफलता
6. गर्भनिरोधक
7. लैंगिक भेदभाव
8. महंगी स्वास्थ्य सेवाऐं
9. दृढ़ राजनीतिक शक्ति का अभाव

10. विदेशी शरणार्थियों का स्थायी रूप से भारत में रह जाना।
11. अनैतिक यौनाचार
12. आर्थिक लाभ के रूप में अधिक बच्चों को देखना
13. जीवन प्रत्याशा में वृद्धि
14. इंटरनेट पर प्रसारित अश्लील विडियोज

भारत की जनसंख्या नीति 2000 :–

भारत दुनिया का प्रथम राष्ट्र है, जिसने 1952 में परिवार नियोजन कार्यक्रम अपनाया और अपनी पंचवर्षीय योजनाओं में बढ़ती हुई आबादी को आर्थिक विकास के बाधक रूप में चिन्हित किया गया। अब तक भारत में दो जनसंख्या नीतियों का निर्धारण किया जा चुका है। प्रथम जनसंख्या नीति 1976 में अपनाई गई जिसे 1982 में संशोधित भी किया गया। इस नीति के प्रमुख लक्ष्य – प्रथम लड़के–लड़की की विवाह आयु 21 और 18 निर्धारित की गई। द्वितीय अनिवार्य नसबंदी थी।''[5]

भारत की दूसरी राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 में निर्धारित की गई। ''नई जनसंख्या नीति जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण हेतु प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक प्रो0 एम.एस. स्वामीनाथन की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई जिसकी सिफारिशों के आधार पर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार ने 15 फरवरी, 2000 को नई राष्ट्रीय जनसंख्या नीति निर्धारित की गई।''[6] नई राष्ट्रीय जनसंख्या नीति के प्रमुख उद्‌देश्य गर्भ–निरोध, स्वास्थ्य सेवा, आधारभूत ढाँचा, स्वास्थ्य कर्मचारियों और एकीकृत सेवा डिलीवरी की अपेक्षाकृत भागों को अविलंब रूप से पूरा करना। साथ ही इसमें प्रजनकता को प्रतिस्थापन स्तर यानि 2 बच्चे प्रति जोड़ा तक लाना है।''[7]

जनसंख्या वृद्धि को स्थिर करने संबंधी सुझाव :–

1. समय–समय पर शैक्षणिक संस्थाओं में परिवार नियोजन संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए और छात्र–छात्राओं को नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
2. सरकार प्रयासों की पारदर्शिता और मॉनिटरिंग समय–समय पर की जाए।
3. ग्रामीण स्तर पर सेवाओं का समन्वय किया जाए।
4. इंटरनेट पर अश्लील फिल्मों पर पूर्णतयाः प्रतिबंध हो।
5. पब्लिक–प्राइवेट पार्टनरशिप को बढ़ावा दिया जाए ताकि दोनों मिलकर ठोस समाधान पर काम किया जाए।
6. सूचना, शिक्षा एवं संचार प्रविधियों का प्रयोग

7. पुरुषों को स्वैच्छिक नसबंदी हेतु प्रोत्साहित किया जाए अथवा दो बच्चों के पश्चात् अनिवार्य नसबंदी लागू की जाए।
8. महिला शिक्षा और परिवार नियोजन पर बल दिया जाए

जनसंख्या विस्फोट के परिणाम :–

हमने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् औद्योगिक प्रगति की किंतु हमारी आर्थिक स्थिति में और लोगों के जीवन स्तर में सुधार नहीं आया। नगरों में तेजी से बढ़ती जनसंख्या ने यातायात, ऊर्जा और दूसरी सभी महत्वपूर्ण सेवाओं को ध्वस्त कर दिया है। निरंतर गंदी बस्तियों में बढ़ोतरी हो रही है। सरकार के समक्ष इन समस्याओं ने चुनौती पैदा कर दी है। इस विशाल जनसंख्या के लिए निवास, भोजन, चिकित्सा सुविधा, रोजगार, शिक्षा आदि की व्यवस्था करवाना एक टेढ़ी समस्या है। वर्तमान में उपलब्ध सड़क, अस्पताल, विद्यालय आदि संसाधनों के अतिरिक्त खाद्यान्न भंडार पर जनसंख्या वृद्धि ने गंभीर प्रभाव डाला है, जिसके कारण आर्थिक विकास के रास्ते में भी बाधा उत्पन्न हुई है।

प्रख्यात अर्थशास्त्री **एडम स्मिथ** ने अपनी कृति **''द वेल्थ ऑफ नेशन''** में लिखा है कि ''समस्त आर्थिक वस्तुओं तथा सेवाओं का स्रोत मनुष्य की योग्यता और प्रयत्न है। देश में उपलब्ध प्राकृतिक स्रोतों के उचित विदोहन के लिए देश की जनसंख्या का उचित और आदर्श अनुपात हो।''[8]

निष्कर्ष :–

भारत की प्रथम जनगणना 1872 में की गई जब भारत की जनसंख्या 2 मिलियन के आसपास थी, आजादी के पश्चात् स्वतंत्र भारत की प्रथम जनगणना में 36 करोड़ थी जो 2011 की जनगणना में 1.21 करोड़ हो चुकी है यानि 3 गुना। **संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष** (UNFDA) की स्टेट ऑफ वर्ल्ड पॉपुलेशन रिपोर्ट 2019 के अनुसार वर्ष 2010–2019 के बीच भारत की आबादी औसतन 1.2 प्रतिशत बढ़ी है, जो चीन की सालाना वृद्धि दर से दो गुने है। निःसंदेह भारत के लिए खतरे की निशानी है। यद्यपि किसी राज्य के आर्थिक विकास में जनसंख्या का हाथ होता है। किंतु मानवीय स्रोत प्राकृतिक स्रोत की अपेक्षा आधारभूत रूप से अधिक हो तो आर्थिक विकास की जगह हानि होती है और देश के समक्ष अनेक समस्याऐं और चुनौतियाँ उभरकर आती है। अतः जितनी जल्दी हो सके भारत को जनसंख्या वृद्धि को रोकने के प्रयास करने होंगे।

संदर्भ ग्रंथ

1. विकिपीडिया ऑनलाइन
2. ऑनलाइन
3. रावत, जयसिंह ''अमर उजाला लेख'' 29 अगस्त, 2023
4. वही, '' रावत पब्लिकेशन
5. शर्मा. जी.एल. सामाजिक मुद्दे पृ. 163, जयपुर
6. वही, पृ. 163
7. दृष्टि (आई.ए.एस) ऑनलाइन पत्रिका
8. शर्मा, जी.एल. वही, पृ. 162